अंक 38
दिसंबर 2023
मूल्य :100 रु /-

ISSN : 2348 - 2672

लहक

साहित्य की वैचारिक पत्रिका

हिंदी के अनूठे लेखक:

चन्द्रकिशोर जायसवाल

डॉ. कर्ण सिंह चौहान

देखता पलकें उठाकर
मौन मैं यह विश्व-मेला,
घूमता सुनसान पथ पर
मैं अकेला, मैं अकेला।

लहक

RNI No.-WBHIN/2013/53192, Vol-10-11, Issue-113-124, Rs.100/-

अंक 38

ISSN : 2348-2672 ■ मूल्य : 100 रु /-

जनवरी 2023-दिसंबर 2023

अंक : 113-124 (संयुक्तांक)

सौधात्री प्रकाशन

लहक

सम्पादक

निर्भय देवयांश

E-mail : lahakmonthly@gmail.com

पत्राचार पता : (केवल पत्राचार के लिए)

बी-3, बांदीपुर रोड, मिस्त्रीपाड़ा, बांसद्रोणी,

थाना - रिजेन्ट पार्क, कोलकाता - 700070

1. Name of the A/C :Saudhatri Prakashan
2. Name of the Bank :Indian Bank
3. Name of the Branch:Central Avenue, Kolkata - 700012
4. Address of the Bank:Indian Bank Central Avenue, Kolkata - 700012
5. MICR : 700019008
6. Type of Account : Saving
7. Account No. : 6056260007
8. IFC Code : IDIB000C004

Cheque should be in favour of 'Saudhatri Prakashan'

स्वागतम 2024

चन्द्रकिशोर जायसवाल विशेषांक :

इस अंक में :

संपादकीय : डॉ. कर्ण सिंह चौहान

5. हिंदी के अनूठे लेखक:
चन्द्रकिशोर जायसवाल

15. 'लहक' के पृष्ठों पर ही हमें इन बौद्धिक चुनौतियों की उत्तेजना सबसे प्रकट रूप में देखने को मिली है: अरुण माहेश्वरी

24. कोलकाता की लघु पत्रिकाएं और लहक: सिद्धेश

Printer and Publisher :
Nirbhay Devyansh, on behalf of owner Saudhatri Prakashan,

Printed at : Shikshan ,
50, Sitaram Ghosh Street,
Kolkata - 700009

Published at : B-3 Bandipur Road, MistryPara, Bansdroni, P.S.- Regent Park, Kolkata- 700070

Editor : Nirbhay Devyansh

© सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।
- प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- समस्त विवाद कलकत्ता न्यायालय के अन्तर्गत विचाराधीन होगा।

लहक

26. लहक के दस वर्ष के निर्भय संघर्ष और सृजन! : प्रो. कृपाशंकर चौबे

28. **चन्द्रकिशोर जायसवाल : जीवन-परिचय**

29. चन्द्रकिशोर जायसवाल : नितांत मौलिक रचनाकार: डॉ. उषाकिरण खान

साक्षात्कार :

31. चन्द्रकिशोर जायसवाल के साथ लेखक-कवि डॉ. संजय कुमार सिंह की बातचीत: 'अब साहित्य ही है, जो समाज को बचा सकता है ...'

43. चन्द्रकिशोर जायसवाल के कथा - साहित्य में समय और समाज: प्रो. विनय कुमार चौधरी

49. चन्द्रकिशोर जायसवाल की साहित्यिक यात्रा: डॉ. वरुण कुमार तिवारी

संस्मरण :

55. फलों से लदे वृक्ष की झुकी हुई शाख: चंद्रकिशोर जायसवाल : रतन वर्मा

65. लेखकीय उपेक्षा या अचर्चा से चंद्रकिशोर जायसवाल जी का कद छोटा नहीं होता: चितरंजन भारती

72. चंद्रकिशोर जायसवाल की कथा : सिद्धेश

73. सृजनात्मक साहित्य की अनुवांशिकी *:* सन्दर्भ चन्द्रकिशोर जायसवाल की कहानियाँ, कथानक (plot) : धनेश दत्त पाण्डेय

87. 'कहानी अपना लेखक स्वयं ढूँढ़ लेती है': डॉ. गुलाबचंद यादव

94. चन्द्रकिशोर जायसवाल: लोकधर्म का साधक कथाकार: उमाशंकर सिंह परमार

106. पारिवारिक खींचतान, सामाजिक काइयांगीरी का विश्वसनीय आख्यान : रणविजय सिंह सत्यकेतु

115. धर्म और भक्ति के सच से

सदस्यता शुल्क : 100 रुपये

व्यक्तियों के लिए : वार्षिक 1500 रु., त्रैवार्षिक 4500 रु., पंचवार्षिक 6000 रु., आजीवन 10,000 रु.

संस्थाओं के लिए : वार्षिक 1600 रु., त्रैवार्षिक 4700 रु., पंचवार्षिक 6500 रु., आजीवन 12,000 रु.

विदेश के लिए : हवाई डाक प्रति अंक 6 डॉलर, वार्षिक 60 डॉलर, जलमार्ग प्रति अंक 4 डॉलर, वार्षिक 30 डॉलर।

मनीऑर्डर/चेक/ बैंक ड्राफ्ट **Saudhatri Prakashan** के नाम से भेजें।

विधि सलाहकार
शम्भुनाथ राय (कलकत्ता हाईकोर्ट)

दिल्ली ब्यूरो - राजू बोहरा
मो. : 09350824380
प्रजा दत्त डबराल
मो. : 09810974880
मुंबई ब्यूरो - अमरनाथ
मो. : 09833188133
लखनऊ ब्यूरो - सुरेश कुमार
मो. : 08009824098
पटना ब्यूरो - आलोक नंदन शर्मा
मो. :06305978747

लहक

साक्षात्कार कराती कहानियाँ:
ऋषिकेश कुमार
120. विमर्शमूलकता से इतर विमर्श का
समाजशास्त्र: श्रीधर करुणानिधि
128. कोशाी अंचल के अप्रतिम कथाकार:
चंद्रकिशोर जायसवाल:
डॉ. चुम्मन प्रसाद उर्फ आदित्य अभिनव
135. पीढ़ी अंतराल से प्रभावित चंद्रकिशोर
जायसवाल की कहानियों के वृद्ध पात्र:
शिल्पी कुमारी
141. नाट्य-विधान की कसौटी पर नाटक
की परख : डॉ. लव कुमार
147. चन्द्रकिशोर जायसवाल के साथ
परिजनों व रचनाकारों की तस्वीरें

चन्द्रकिशोर जायसवाल की कहानियाँ :

153. बाजार
157. भोर की ओर
162. दिवंगत शुभकामनाएँ
166. रिश्ता
171. दगाबाज

चन्द्रकिशोर जायसवाल की कविताएँ:

176. जीवन यात्रा, पेशी, भूख,
बीसवीं सदी, कूटस्वप्न,
कोखजली, सन्तोष, विज्ञापन,
तलवार की इज्जत, गिद्ध और लाश
183. चन्द्रकिशोर जायसवाल की
पुस्तकों के प्रकाशन वर्ष / 161.
चन्द्रकिशोर जायसवाल के नाटकों
व एकांकी के प्रकाशन वर्ष
184. चन्द्रकिशोर जायसवाल को लिखे
लेखकों के सन्दर्भित पत्र

**चन्द्रकिशोर जायसवाल की
पुस्तकों की समीक्षाएँ:**

215. दुखग्राम का दुख: पंकज साहा
224. पलटनिया (उपन्यास):
विनोद कुमार मिश्रा
229. मणिग्राम: समय को समय से
पूर्व सूंघ लेने की यांत्रिकी :
दीर्घ नारायण
235. दुखग्राम से गुजरते हुए :
लालबाबू ललित
239. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के प्रथम
राष्ट्रपति चुने जाने की दास्तान :
डॉ. श्रीभगवान सिंह
259. हिन्दी ग़ज़ल की यात्रा में
कुछ मील के पत्थर:
डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'
283. सुधाकर अदीब की आत्मकथा
'मानुष पुराण' का अंश:
सुधाकर अदीब
292. आलोचना का कार्य मूल्य देना
नहीं: रामचंद्र ओझा

गीत, कविताएँ, ग़ज़ल:

295. डॉ. रामकृष्ण 297. सरला माहेश्वरी
305. राकेश भारतीय 309. डॉ एम डी सिंह
311. वियतनामी कवियों की कविताएँ
(Vietnamese Poets poetry) 326.
धर्मपाल महेंद्र जैन 327. मानेश्वर मनुज 330.
चन्द्रशेखर सिंह 332. कैलाश दहिया 337.
सत्य प्रकाश दुबे 338. निशान्त 341.दिव्या
त्रिवेदी 342. विनोद शलभ 345. देव नाथ
द्विवेदी 346. अशोक मिज़ाज
399. सत्येन्द्र कुमार रघुवंशी

लहक

कहानियाँ :
348. संकल्प: महेंद्र नारायण पंकज
354. बड़ी मालकिन: दक्षिणेश्वर प्रसाद राय
लघुकथाएँ:
363. पुष्पराज
पुस्तक समीक्षाएँ:
364.अथर्वा : एक अद्भुत प्रेम कथा
एक यायावर कवि की :
डॉ एम डी सिंह
367. 'संघर्ष का सुख' : हितेन्द्र प्रताप सिंह
370. जीवन के धरातल को छूती
कविताएँ : डॉ. वरुण कुमार तिवारी
373. भावनाओं से भरी काव्य यात्रा 'चाय सा
हमसफर' : विजय कुमार तिवारी
378. पहाड़ों की सृजन यात्रा : 'पगड़डी में
पहाड़': प्रो. सिद्धार्थ शंकर त्रिपाठी
384. गणेश गनी: चयनित कविताएँ:
समसामयिकता भावबोध लिए हुए :
पवन कुमार
390. जीवन में सहजता की तलाश बनाम
'सिवान में बाँसुरी': प्रशांत जैन
साहित्यिक गतिविधियाँ:
397. डॉ. श्रीभगवान सिंह 'दिनकर
राष्ट्रीय सम्मान' से अलंकृत
398. मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने महेंद्र नारायण
पंकज को मोहन लाल महतो वियोगी
पुरस्कार से सम्मानित किया
लहक की दस वर्ष पूर्ति पर बधाई संदेश:
23. चन्द्रशेखर सिंह 71.चितरंजन भारती
234. हरे राम पाठक 258. जी.के.सक्सेना 291.
सुधाकर अदीब 294.रामचंद्र ओझा 304. निशान्त
308. राकेश भारतीय 336. कैलाश दहिया
366. सत्येन्द्र कुमार रघुवंशी 383.पंकज साहा
396. श्रीभगवान सिंह 396. श्रीमोहन तिवारी
398. देव नाथ द्विवेदी
400. चन्द्रकिशोर जायसवाल का लोक और
हिन्दी साहित्य की भाषा सत्ता : निर्भय देवयांश

लहक

संपादकीय

हिंदी के अनूठे लेखक:
चन्द्रकिशोर जायसवाल

- डॉ. कर्ण सिंह चौहान

बिहार प्रांत के बिहारीगंज, मधेपुरा में 1940 में जन्में और आयु के तिरासी वसंत देख चुके कथाकार चन्द्रकिशोर जायसवाल हिंदी के अनूठे रचनाकार हैं। उनका संपूर्ण विपुल लेखन पढ़ने का अवसर तो नहीं मिला लेकिन उनके संबंध में विभिन्न आकलनों से जो सूचनाएं प्राप्त हुई हैं उनके अनुसार उन्होंने दस उपन्यास (कुछ लोगों का कहना बारह है), बारह कहानी-संकलन, छः नाटक और लगभग चार एकांकी लिखे हैं। यह संख्या मेरे पास उपलब्ध उनकी पुस्तकों के लेखक परिचय में भी है, हो सकता है उसमें कुछ चीजें छूट रही हों। उनके परिचय में ही सूचना है कि उनके उपन्यास 'गवाह गैरहाजिर' पर राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा 'रुई का बोझ' नाम से एक फिल्म बनाई गई जो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खूब सराही गई। एक अन्य फिल्मांकन उनकी चर्चित कहानी 'हिंगवा घाट में पानी रे!' का किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें कई सम्मानों से भी विभूषित किया गया जिनमें 'रामवृक्ष बेनीपुरी सम्मान' (हजारीबाग), 'बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान' (आरा), 'आनंद सागर कथाक्रम सम्मान'(लखनऊ) तथा बिहार राष्ट्रभाषा परिषद का साहित्य साधना सम्मान आदि प्रमुख हैं ।

चन्द्रकिशोर जायसवाल ने आठवें दशक से लिखना प्रारंभ किया और उनकी कहानियां अपने समय की हिंदी की लोकप्रिय साहित्यिक पत्रिकाओं - कहानी, धर्मयुग, हंस आदि-में प्रमुखता से छपीं। भले ही उनकी कहानियों का यह प्रारंभिक दौर ही था लेकिन उन्हें पाठकों का भरपूर प्यार मिला। इसके लिए मैं भी यहां बहु-उद्धृत उस वृत्तांत को ही पुनः पाठकों के सामने लाना चाहता हूं जिससे यह स्पष्ट होता है कि पाठक के लिए न किसी लेखक का वरिष्ठ होना कोई महत्व रखता है, न उसका प्रसिद्ध अथवा नया होना। यदि किसी रचना में दम है और वह उनके मन को छूती है तो वह अपने बल-बूते पर पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करती है और उसकी निर्व्याज प्रतिक्रियाएं भी आमंत्रित करती है।

'धर्मयुग' पत्रिका में उनकी प्रारंभिक कहानियों में से ही एक 'नकबेसर कागा ले भागा' उसके 1978 के नववर्षांक में प्रकाशित हुई थी। कहा जाता है कि इस कहानी ने पठनीयता के अब तक के सारे रिकार्ड तोड़ दिए। स्वयं पत्रिका के संपादक धर्मवीर भारती ने यह सूचित किया कि इस कहानी पर लगभग ढाई हजार चिट्ठियां आई हैं। इस बात का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि जब ढाई हजार पाठक कहानी को पढ़कर इतना उत्साहित हुए कि संपादक के नाम पत्र लिखने तक गए तो ऐसे कितने ही गुणा और पाठक रहे होंगे जिन्होंने पत्र नहीं लिखा होगा। आम तौर पर